१८. आये मेहेरबा प्रभु आये

आये मेहेरबा प्रभु आये, कोई माने न माने ।
सत्प्रेमसे जगकी बिगडीको आये फिरसे बनाने ॥धृ.॥

क्या मेहेरबाको जाने कोई, वो भाग सबके नसीब नही ।
हो कोटमें बिरला अगर वही, जानेगा वो परब्रह्म यही ।
कोई बात नही कहनेकी, ना कोई चीज बताने ॥१॥

अनुभवका है ये राज भाई, गर लालच हो कर यत्न तूही ।
ले प्रीतमंत्र भज मनमेंही, तू जानेगा वो सत्य सही ।
कहता हूँ बचन मेहेरका, कोई माने न माने ॥२॥

नही अुनबिन तुझको छुटकारा, भाई सुन भवसागर है गहरा ।
उनके सन्मुख पंडित बहरा, सब पोथी पुस्तक है गठरा ।
मेहेरबिन ना छुडवावे कोई माने न माने ॥३॥

अरे भाग कब तक भागत है, डुब भवमें कब तक डूबत है ।
ये झूठ पसारा तजना है, इस राहपे एक दिन आना है ।
'मधुसूदन' जावो शरण मेहेरकी, तो सब जाने ॥४॥